महिषासुर वध - भाग 1 "जब स्वर्ग में हाहाकार मच गया"

Gautii M

हिमालय की बर्फीली गुफाओं में महिषासुर नाम का एक शक्तिशाली असुर कठोर तपस्या कर रहा था। उसका शरीर आधा मनुष और आधा भैंसे का था, और उसकी तपस्या की ऊर्जा से पूरी धरती औ आकाश काँप रहे थे।

हजारों वर्षों की कठोर तपस्या के बाद ब्रह्मा जी प्रकट हुए और महिषासुर को वरदान दिया कि कोई भी पुरुष, देवता या मनुष्य उसे नह मार पाएगा। वरदान मिलते ही महिषासुर अहंकार से भर गया और खु को अजेय समझने लगा।

अपनी विशाल और भयानक असुर सेना के साथ महिषासुर ने स्व लोक पर अचानक हमला कर दिया। इंद्र देव, अग्नि देव और वरुण दे जैसे शक्तिशाली देवता भी उसकी शक्ति के सामने बेबस नजर आने लगे।

अहंकारी महिषासुर ने इंद्र का सिंहासन छीन लिया और सभी देवताओं को अपमानित करके स्वर्ग से बाहर निकाल दिया। पूरे ब्रह्मांड अंधकार छा गया और धर्म का अस्तित्व गहरे संकट में पड़ गया।

असहाय देवता ब्रह्मा जी के पास पहुँचे, जो उन्हें लेकर भगवान विष्णु और भगवान शिव की शरण में गए। तीनों देवों ने विचार किया। महिषासुर के वरदान के अनुसार केवल एक स्त्री ही उसका अंत कर सकती है।

तभी ब्रह्मा, विष्णु और शिव के शरीर से एक दिव्य और अत्यंत तेजस्वी प्रकाश पुंज बाहर निकला। इस दिव्य प्रकाश ने पूरे ब्रह्मांड को अपनी चमक से रोशन कर दिया और एक महान शक्ति का रूप लेने लगा।

उस महान ज्योति पुंज से दस भुजाओं वाली तेजस्वी माँ दुर्गा प्रक हुईं, जिनके चेहरे पर दिव्य तेज और आँखों में करुणा थी। देवताओं न हर्षित होकर उन्हें अपने सबसे शक्तिशाली अस्त्र-शस्त्र जैसे त्रिशूल, सुदर्शन चक्र और वज्र भेंट किए।

हिमालय राज ने माँ दुर्गा को सवारी के लिए एक विशाल और पराक्रमी सिंह प्रदान किया। माँ दुर्गा अपने दसों हाथों में शस्त्र सजाकर और सिंह पर सवार होकर महिषासुर के विनाश के लिए युद्ध भूमि की ओर प्रस्थान कर गईं।

जब महिषासुर ने सिंह की भयानक दहाड़ सुनी, तो वह घमंड में च होकर अपने महल से बाहर आया। उसने देखा कि एक देवी युद्ध के ि खड़ी हैं, लेकिन वह उन्हें एक साधारण स्त्री समझकर जोर-जोर से हँस लगा।

माँ दुर्गा ने अपनी गर्जना से महिषासुर को चुनौती दी और युद्ध क
शंखनाद किया। यह कोई साधारण संग्राम नहीं, बल्कि अधर्म पर धर्म क
विजय की महान गाथा की शुरुआत थी, जहाँ स्वयं आदि शक्ति असुर क
अंत करने आई थीं।